...नाटक की रचना की गयी है। ...महर्षि कण्व को

उपमा कालिदासस्य

कविकुल शिरोमणि महाकवि कालिदास ने अपनी कविता-कामिनी को विविध अलंकारों से अलंकृत कर आकर्षक एवं रसपेशल बनाया है। उनका अलंकारों पर असाधारण अधिकार है और वे स्वतः उनके चक्षुओं के समक्ष स्फुरित होते हैं। जिस प्रकार विविध अलंकारों में कोई सबसे अधिक प्रिय होता है, उसी प्रकार कालिदास को उपमा अलंकार सर्वाधिक प्रिय है। वैसे रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त आदि अलंकारों का प्राधान्य है। अर्थान्तरन्यास के प्रयोग में भी वे सिद्धहस्त हैं।

उपमा का तात्पर्य केवल उपमा अलंकार से न लेकर सादृश्यमूलक अलंकारों से लिया जाना चाहिए, क्योंकि कालिदास ध्वनिकाव्य प्रस्तोता हैं। अतः उनका भाव व्यापक और चमत्कार उत्पन्न करने वाले अन्य अलंकारों से है, क्योंकि वे बड़ी ही उपयुक्तता और मार्मिकता से रखे गये हैं। तथापि विद्वानों ने उपमा की विशेष सराहना की है। उनकी उपमा में वैशिष्ट्य भी है। वे उपमायें लोकजीवन, अरण्य-जीवन, प्राकृतिक-जीवन, धार्मिक-जीवन तथा अन्य विविध पक्षों से संकलित है। उनमें यथार्थता, रम्यता, एवं उपयुक्तता सर्वत्र वर्तमान है। कहीं भी उपमेय या उपमान कृत औचित्य का अतिक्रमण नहीं हुआ है। उनकी उपमाओं को हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं—

१. शास्त्रीय उपमायें, २. प्राकृतिक उपमायें,
३. मूर्तामूर्त उपमायें, ४. लौकिक उपमायें।

१. शास्त्रीय उपमायें— इस श्रेणी के अन्तर्गत विभिन्न शास्त्रों, वेदों, स्मृतियों, दार्शनिक एवं पौराणिक सन्दर्भों की उपमायें आती हैं। महाराज दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा ने कामधेनु-पुत्री नन्दिनी का वैसे ही अनुसरण किया, जिस प्रकार स्मृति श्रुति का अनुसरण करती है— 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्'। जिस प्रकार बुद्धि का कारण अव्यक्त या मूल प्रकृति है, उसी प्रकार सरयू नदी का कारण मानसरोवर है 'ब्राह्मं सरः कारणमाप्तवाचो बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्तिः'। १२/६० रघु०। व्याकरणशास्त्र की उपमा देखिए—

'अपवाद इवोत्सर्गं व्यावर्तयितुमीश्वरः'। १५/७ रघु० अर्थात् जिस प्रकार अपवाद नियम उत्सर्ग को बाँधता है, उसी प्रकार शत्रुघ्न ने लवणासुर को बाँधा।

२. प्राकृतिक उपमायें— इसका क्षेत्र बड़ा ही व्यापक है। कालिदास ने अपने नायक एवं नायिकाओं के सौन्दर्य-चित्रण में विशेष रूप से प्रकृति का ही आश्रय लिया है। इसके अन्तर्गत पुष्प, लता, नग, सूर्य, चन्द्र, ऋतु आदि के विभिन्न रूप प्रस्तुत होते हैं। दिलीप एवं सुदक्षिणा के मध्य गाय की शोभा दिन और रात्रि के मध्य, सन्ध्या के समान

है— 'दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या'। २/२० रघु। स्तनों के भार से झुकी पार्वती सञ्चारिणी लता के समान प्रतीत हो रही है– 'पर्याप्त पुष्पस्तवकावनम्रा सञ्चारिणी पल्लविनी लतेव।' शकुन्तला का अधर किसलय के समान, भुजायें कोमल विटप के समान तथा यौवन पुष्प के समान अङ्गों में सन्नद्ध है : **अधरः किसलयरागः कोमल विटपानुकारणौ बाहू। कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्**। १/२१ शाकुन्तल। मालोपमा से विभूषित शकुन्तला का सौन्दर्य सहृदयों को रोमांस के आसव से मदोन्मत्त कर देता है–

'अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररु है,
रनाबिद्धं रत्नं मधुनवमनस्वादित रसम्।
अखण्डं पुष्यानां फलमिव व तद्रूपमनघं,
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥'

२/१० अ० शा०

३. मूर्तामूर्त उपमायें— इस श्रेणी में कवि ने मूर्त एवं अमूर्त भावों की उपमायें ली हैं। दिलीप साक्षात् क्षात्रधर्म के समान थे— 'क्षात्रोधर्म इवाश्रितः।' १/१३। रघु०। एक अन्य उपमा में राजनीति की झलक मिलती है— 'त्रिसाधना शक्तिरिवार्थमक्षयम्'। ३/१३ रघु०। राम आदि चारों भाई पुरुषार्थ के समान थे—
'धर्मार्थकाममोक्षाणामवतार इवाङ्गभाक्'। १०/८४ रघु०।

४. लौकिक उपमायें— इसमें जीवन के व्यावहारिक पक्ष की विभिन्न उपमायें सम्मिलित हैं। अरुन्धती से युक्त वशिष्ठ वैसे ही शोभित है जैसे स्वाहा से वह्नि 'स्याहयेव हविर्भुजम्। १/५६ रघु०। विद्या अभ्यास से वश वर्तिनी होती है ''विद्यामध्यसनेनैव प्रसादयितुमर्हसि'। इसी सन्दर्भ में उनकी 'दीप-शिखा' की उपमा का विस्मरण नहीं किया जा सकता है। इन्दुमती द्वारा छोड़े गये राजा वैसे ही विवर्ण-वदन थे, जैसे दीपशिखा से मुक्त अट्टालिकायें–

'सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ, यं यं व्यतीयाय पतिम्वरा सा।
नरेन्द्र मार्गाट्ट इव प्रपेदे, विवर्ण भावं स स भूमिपालः॥'

६/६७ रघु०।

अतः 'उपमाकालिदासस्य' इस कथन के साथ ही निम्न कथन उसकी पुष्टि करता है—

'His forte is declared to lie in similies and the praise is well deserved.' –Keith

पं० चन्द्रशेखर के शब्दों में—

'अलंकारों के प्रयोग में कवि ने अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है। उनकी कविता अत्यधिक अथच अनावश्यक अलंकारों के भार से आक्रान्त कामिनी की भांति मंद-मन्थर गति से चलने वाली नहीं है, अपितु 'स्फुटचन्दतारिका विभावरी' की भाँति अपने सहज सौन्दर्य से सहृदयों के चित्त को आकृष्ट करने वाली है।'